आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :– कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: –प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2438 • उदयपुर, शुक्रवार 27 अगस्त, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

नारायण सेवा द्वारा सिरोही में 62 गरीब परिवारों को राशन दिया

नर को नारायण का स्वरूप मानते हुए असहाय, दिव्यांग, मूक बधिर एवम् दूसरी लहर कोरोना महामारी के चलते बेरोजगार हुए गरीब कामगारों को नारायण सेवा संस्थान उदयपुर की शाखा सिरोही द्वारा निःशुल्क राशन का वितरण किया गया।

पूरे भारतवर्ष में 50000 परिवारों को राशन निःशुल्क जा रहा है। सिरोही शाखा के अंतर्गत 62 गरीब परिवारों को निःशुल्क राशन दिया गया। सिरोही शाखा संयोजक अदाराम जी भाटिया ने बताया कि श्री कैलाश जी सुथार संरपच झाड़ोली ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मुख्य अतिथि श्री नरेन्द्र सिंह जी ने संस्थान गतिविधियों का अवलोकन किया। संस्थापक चैयरमेन कैलाश जी 'मानव' ने बताया कि संस्थान 36 वर्षों से दीन–दुःखियों की निःस्वार्थ सेवा कर रहा है। इस वर्ष कोरोना काल में संस्थान घर–घर भोजन सेवा, ऑक्सीजन सिलेंडर, एम्बुलेंस सेवा, कोरोनाकिट, निःशुल्क हाइड्रोलिक बेड भी उपलब्ध करवाने का संकल्प लिया इस दौरान हजारों कोरोना संक्रमित को निःशुल्क सेवा उपलब्ध करवायी जा रही हैं। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि संस्थान ने ऐसे जरूरतमंदों के लिए नारायण गरीब परिवारों तक राशन पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

इसी क्रम में उदयपुर शहर के विभिन्न आदिवासी क्षेत्र में शिविर लगाकर निःशुल्क राशन वितरण किया जा रहा है। प्रत्येक किट में 15 किलो आटा, 5 किलो चावल, 4 किलो दाल, 2 किलो तेल, 2किलो शक्कर, 1 किलो नमक एवं आवश्यक मसाले दिए गए। सिरोही आश्रम की पूरी टीम ने चयनित परिवारों को राशन वितरण में सहयोग प्रदान किया।

संस्थान द्वारा बरेली में राशन सेवा

नारायण सेवा संस्थान यों तो दिव्यांगता मुक्ति अभियान में प्रमुख रूप से सेवारत है किंतु कोरोना काल में जरूरतमंदों के लिये विविध प्रकार की सेवा में अग्रणी रहा है। आप सभी के आशीर्वाद से देशभर के करीब 50 हजार परिवारों को राशन–सामग्री प्रदान करने का सौभाग्य पाया है। यह प्रक्रिया अनवरत जारी है।

ऐसा ही एक राशन वितरण शिविर नारायण गरीब परिवार राशन–योजना के अंतर्गत नारायण सेवा संस्थान आश्रम बरेली (उत्तरप्रदेश) में 19 अगस्त 2021 को आयोजित किया गया। नारायण सेवा संस्थान की इस शाखा द्वारा कुल 60 परिवारों को राशन–किट प्रदान किये गये।

शिविर प्रभारी श्री मुकेश जी के अनुसार इस कार्यक्रम में जो अतिथिगण पधारे उनके शुभनाम निम्नलिखित हैं–मुख्य अतिथि श्रीमान अटेश जी गुप्ता, अध्यक्ष श्रीमान गोल्डी जी गुप्ता, विशिष्टअतिथि श्रीमान रानू जी गुप्ता, श्रीमान अनिल जी गुप्ता, श्रीमान् सुदेश जी गुप्ता, श्रीमान संजीव जी गुप्ता, श्रीमती सीमा जी,(समाजसेवी), एवं श्रीमान कंवरपाल सिंह जी (शाखा सेवा प्रेरक बरेली)।

शिविर में प्रभारी श्री मुकेश जी शर्मा ने व्यवथाएं देखीं। प्रत्येक परिवार को राशन किट में 15 किलो आटा, 2 किलो दाल, 5 किलो चावल, 2 किलो तेल, 4 किलो चीनी, 1 किलो नमक एवं मसाले प्रदान किए गए।

हिमाचल प्रदेश के पोन्टा गाँव (जिला –सिरमौर) के ट्रान्सपोर्टर मोहम्मद इकबाल – बतूल बेगम की 25 वर्षीय बेटी इशरत जब तीन साल की थी, पोलियो रोग की चपेट में आ गई। सहारनपुर (उ.प्र.) में लगातार दो माह तक इलाज भी करवाया पर फर्क नहीं पड़ा। आस्था चैनल पर नारायण सेवा संस्थान के पोलियो चिकित्सा कार्यक्रम को देखकर उदयपुर जाने का मानस बनाया। इशरत के साथ आए उनके सैनिक भाई इम्तियाज हाशमी ने बताया कि संस्थान के अस्पताल में जाँच के बाद ऑपरेशन हो गया। कुछ दिन बाद डॉक्टरों ने दूसरे ऑपरेशन की जरूरत बताते हुए तारीख दी। पहले ऑपरेशन के बाद काफी सुधार हुआ। पाँव की मोटाई बढ़ी और अस्थि–संधि (जोड़) खुलने से उठने–बैठने में आराम मिलने लगा। यह किसी चमत्कार से कम न था। दूसरा ऑपरेशन हो चुका है। हमें उम्मीद है कि स्थिति में और सुधार आएगा।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अच्छा लगा, खुशी हुई

नाम – अरुण (3 वर्ष), पिता श्री हनुमान, शहर–मालपुरा, टोंक राजस्थान। जन्म से ही अरुण के दोनों पांव टेढ़े–मेढ़े थे। इलाज के लिए जयपुर आदि कई बड़े शहरों में दिखाया, लेकिन कहीं कोई उपचार सम्भव न हो सका।

उनके बड़े भाई ने –जो पुलिस में थे, और कई बार संस्थान में आ चुके हैं – यहां के बारे में बताया। इस तरह वे संस्थान पहुंचे। पांव की जांच के बाद एक पैर का ऑपरेशन हुआ जिससे राहत मिली। दूसरे पैर का भी शीघ्र ऑपरेशन होगा।

श्री हनुमान कहते है कि –"मेरे बेटे का एक पैर बिल्कुल सीधा हो गया, यह बहुत खुशी की बात है। यहां आकर बहुत ही अच्छा लगा। ऐसी सुख–सुविधाएं कहीं भी देखने को नहीं मिलती हैं।"

प्रभु कृपा – नारायण सेवा

वहेगाँव, जिला–बालाघाट (म.प्र.) निवासी अजयलाल बिशेन (पलस्तर मिस्त्री) का 9 वर्षीय पुत्र संकेत जन्म से ही पाँव पर खड़ा नहीं रह पाता। नागपुर के एक निजी अस्पताल में इलाज भी हुआ। साल भर एक्सरसाइज भी करवाई पर आराम नहीं हुआ। बालक के इलाज के लिए संस्थाान में आए अजयलाल व उनकी पत्नी श्रीमती सुनीता ने उक्त जानकारी देते हुए बताया कि कुछ समय पहले हमारे पड़ोस के गांव की एक बच्ची नारायण सेवा संस्थान के पोलियो चिकित्सालय से उपचार करवा कर लौटी थी। अब वह सामान्य कामकाज कर लेती और चलती–फिरती भी है। उससे सारी जानकारी लेने के बाद हम यहाँ आए। जाँच हुई और निर्धारित तिथि पर ऑपरेशन हो गया। यहाँ काफी दूर–दूर से पोलियो व सी.पी. ग्रस्त बच्चों व युवाओं को देखा जो ऑपरेशन के बाद खुश हैं। हमें भी उम्मीद है कि संकेत खड़ा होगा और चलेगा भी। यहाँ इलाज, आवास, भोजन निःशुल्क है। देखभाल भी बहुत अच्छी है। हम तो दानदाताओं से यही करबद्ध प्रार्थना करेगे कि वे संस्थान को ज्यादा से ज्यादा सहयोग करें ताकि हम जैसे गरीबों के बच्चे इलाज पाकर मायूसी से उबर सकें।

सम्पादकीय

जीवन का प्रवाह और जल का प्रवाह एक समान है पर अंतर भी हैं। जीवन सतत प्रवाहमान है वैसे ही जल का प्रवाह भी नित्य है। जल का गुणधर्म शीतलता है तो जीवन की सफलता भी शीतलता में ही, शांतता में ही है। अन्य कई समानतायें भी हैं।

अंतर की दृष्टि से देखें तो जल का प्रवाह ऊँचाई से नीचे की ओर होता है किन्तु जीवन का प्रवाह नीचे से ऊपर की ओर वांछित होता है। ऐसा नहीं कि जीवन कभी नीचे नहीं जाता, जाता है पर वह नकारात्मकता होती है। पानी ऊपर जाता है प्रयासपूर्वक, जीवन ऊपर उठता है अभ्यासपूर्वक। प्रयास कभी सफल होते हैं तो कभी असफल किन्तु अभ्यास हमेशा फलदायी ही होते हैं। जीवन का मूल आत्मा है तो जल का मूल अणु। दोनों शाश्वत हैं, अमर हैं।

सच तो यह है कि हम जल और जीवन की साम्यता रखें तो परोपकार, शीतलता, संगीत और प्राणतत्व को जल से सीख कर जीवन में उतार सकते हैं। जिस दिन जल के गुण जीवन में उतर जायेंगे, निर्मलता स्वतः व्याप्त हो जायेगी।

कुछ काव्यमय

जब करुणा की धारा
बहकर
जन–जन की पीड़ा हरने
भाव–नदी में बहेगी।
तब देखना यह दुनिया
मानवता पंथ के
सूत्रों की कथा
बड़ी ही आशान्वित होकर
एक दूसरे से कहेगी।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

उमंग उल्लास

सेतु बन्ध की कथा। ये कथा मिलाने की, ये कथा प्रेम बढ़ाने की, ये कथा परिवार के एकता की, ये कथा समाज के उन्नति की। सबसे पहले तो मैं माताओं, बहनों को प्रणाम, नमन करूं। बन्धुओं को नमन करूं। और मेरे मन में बार– बार आता है। ये श्रीराम कथा।

जब मैं छोटा था तब रामचरितमानस का पाठ पूज्य पिताजी श्री नवाह्नपरायण भी करते थे। अखण्ड रामायण और मास पारायण भी होता था। रामचरितमानस की चौपाई, दोहा पढ़ने लगता हूँ तब मेरे मन में बार–बार आता भगवान ऐसा अच्छा काम करायेगा। ये सेतु बन्ध की कथा। वो सेतु समुद्र वाला नहीं, ये वो उत्साह वाला सेतु है जब श्रीराम भगवान कृपा करके, चारों भाई राम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुधन और सीताजी, माण्डवी जी, उर्मिला जी और श्रुतकीर्ति जी, अयोध्या में पधारे। उस समय उत्साह, उमंग था। ये उत्साह, उमंग और उल्लास कोई मुझे कह रहा था कि– बाबूजी बाबूजी आपको विदित है कि नहीं भारत सरकार जब कोई सौ साल का हो जाता है तो उसकी पेंशन डबल कर देती है।

भारत सरकार में कितने लोग होंगे? एक सौ तीस करोड़ में बहुत सारे महानुभाव तो भारत सरकार में भी नहीं, राज्य सरकार में भी नहीं। ये अपना पेन्शन डबल करने का अर्थ अपना उत्साह डबल हो जाना चाहिये। मन कभी बूढ़ा नहीं होता। बुद्धि कभी कमजोर नहीं होती। ये

हड्डियाँ थोड़ी कमजोर होगी, तो कुछ विटामिन की दवा लेकर ठीक कर लेंगे।

राम भगवान पधारे तो अयोध्या में बधाइयाँ। चारों तरफ तोरण द्वार सजाये गये। भगवान श्रीराम, भगवान श्रीलक्ष्मण जी और दशरथ जी इतने प्रसन्न थे। अपने गुरुदेव वशिष्ठ मुनि के सन्मुख सबको खड़ा करके बोले– गुरुदेव ये सब आपका है। ये धन, सम्पति, वैभव, अयोध्या का राज आपका है। वो जो चाहोगे वहीं हो जायेगा। एक तरफ उदारता से कहते हैं – कृपण राजा के राज में प्रजा सुखी नहीं रहती। ये बहुत ज्यादा कंजूसी करना भी अनर्थ है। ये भी एक विकार है। हाँ, राजा बड़े उदार परन्तु गुरुदेव वशिष्ठ मुनि जी ने उतना ही लिया, जितना उचित था। जितना बनता था।

जमाना आज कैसा बदल गया? किन्हीं से कोई यज्ञ, कर्मकाण्ड कराते हैं, पूछते हैं– पण्डित जी कुल मिलाके आपको कितना देना है? कई महाराज ऐसे बढ़िया, एकदम विप्र होते। बोलते– आप जो दोगे वो माथे पे चढ़ाके ले लूंगा। नारायण सेवा जब शुभारम्भ हुई उसके बाद 1993 में, जब बाम्बे में कुछ ऑपरेशन कराये। कुछ, कभी– कभी यज्ञ और कभी–कभी यज्ञ में विघ्न भी पैदा हो जाता है। एक लोभी महानुभाव मिल गये थे। बाद में हमने परिवर्तन किया, और दूसरों के पास गये।

बोले– आप जो दोगे वो ले लूंगा। मैंने कहा– आप बता दीजिये, आप पहले हुकम कर दीजिये। आपका भी मन खुश रहेगा। उन्होंने कहा– आप सवा रुपया भी दे दोगे ऑपरेशन का, तो मैं गरदन झुका के ले लूंगा। एक किंचित मात्र भी मैं मन में नाराज नहीं रहूंगा। हमने कहा– डॉक्टर साहब गले लगिये तो। वशिष्ठ जी ने उतना ही लिया, जितना उचित। ऐसे ही अपने को भाइयों– बहनों लेना चाहिये। ये लालच बुरी बला है। ये लोभ पाप का बाप है। कोई लोभी हो जावे, और लोभ हो जावे तो बहुत मुश्किल होती है।

विश्वामित्र महाराज भी बड़े त्यागी। चक्रवर्ती सम्राट दशरथ जी ने उनको भी कहा– सब कुछ आप जो कहोगे वो हो जायेगा। उन्होंने भी अपना नेक लिया। प्रतीक मात्र लिया। ये कहते हैं, दोनों तरफ से अच्छाई। सेवक चक्रवर्ती सम्राट दशरथ जी कह रहे हैं। ऐसा युग आज भी आना चाहिये। जहाँ चक्रवर्ती सम्राटों के सोने के स्वर्ण मुकुट संन्यासी, ऋषि– महर्षि ऐसे रिसर्च करने वाले, मानवता का कल्याण करने वालों के चरणों में झुके। विश्वामित्र जी भी पधार गये।

– कैलाश 'मानव'

समझदार मंत्री

देख एक–दो विघ्न बीच में,
हुआ मुझे उल्टा विश्वास।
बाधाओं के भीतर ही तो,
कार्य–सिद्धि करती है वास।।

एक राजा अपनी मंत्रिपरिषद् में एक मंत्री को बहुत चाहते थे। राजा की इस प्रवृत्ति से मंत्रिपरिषद् के अन्य

मंत्री उस मंत्री से ईर्ष्या रखते थे। एक बार वे सभी राजा के पास पहुँचे और उनसे पूछा–हे राजन्! हम में ऐसी क्या कमी है या हमने ऐसा क्या कृत्य किया है, जिसकी वजह से आप हमसे उस मंत्री के समान स्नेह नहीं रखते?

राजा ने उत्तर दिया – वह मंत्री बहुत बुद्धिमान है और वह अपनी बुद्धिमता का उपयोग राज्य और जनता की भलाई में करता है, इसीलिये मैं उसे चाहता हूँ। इस पर मंत्रियों ने कहा– महाराज, एक बार उसकी परीक्षा तो लेकर लेखिए। राजा ने कहा– आप ही बताइए, किस प्रकार उसकी परीक्षा ली जाए?

तब राजा और उन ईर्ष्यालु मंत्रियों ने मिलकर परीक्षा लेने हेतु एक विस्तृत योजना बनाई। योजना के तहत एक बड़े से हॉल में बहुत सारे पुरस्कार रख दिए गए तथा पूरी सभा में घोषणा करवा दी गई कि जिसको जो पुरस्कार पसन्द हो, वो अपनी इच्छानुसार ले ले। सभी मंत्रियों ने अपनी–अपनी पसन्द के अच्छे पुरस्कार ले लिए। उस चतुर मंत्री के पास इस घोषणा की सूचना बाद में पहुँची। उसके हाथ में एक खाली थाली आई। यह देख अन्य मंत्री उस पर हँसने लगे तथा उनके साथ राजा भी उस पर हँसने लगा। चतुर मंत्री समझ गया कि दाल में कुछ काला है। उसने सभी से पूछा –आप सभी क्यों हँस रहे हैं? परन्तु किसी ने भी कोई उत्तर नहीं दिया और सभी लगातार हँसते रहे। यह देखकर वह मंत्री भी हँसने लगा। मंत्री को हँसता हुआ देखकर राजा एवं अन्य मंत्री चुप हो गए।

उन्होंने उस मंत्री से पूछा–तुम क्यों हँस रहे हो? मंत्री ने पूछा–राजन, आप क्यों हँस रहे हैं? राजा ने उत्तर दिया–हम सब तुम्हारी लाचारी पर हँस रहे हैं। सभी के पास सुन्दर और कीमती उपहार हैं, परन्तु तुम्हारे पास केवल एक खाली थाली है। परन्तु मंत्री, तुम क्यों हँस रहे हो? मंत्री ने उत्तर दिया –महाराज, मैं आपकी लाचारी पर हँस रहा हूँ, क्योंकि जिस राज्य का राजा आप जैसा हो, जो अपने मातहतों को खाली थाली उपहार में देता हो, ऐसे कंगाल राजा का होना या ना होना बराबर है।

ऐसे कंगालियत वाले राज्य में उपहार नहीं देना चाहिए। अब राजा को अपनी गलती का अहसास हो गया। राजा ने मंत्री को स्वर्ण आभूषणों के उपहार प्रदान किए। समझदार व्यक्ति बाधाओं से घबराता नहीं है। वे ही व्यक्ति सफल होते हैं, जो मुसीबतों का डटकर मुकाबला करते हैं। दुनिया ऐसे ही लोगों की मिसाल देती है।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

टेलीफोन ऑफिस में दोपहर एक से दो के बीच लंच की छुट्टी होती थी। कैलाश इस समय का उपयोग अस्पताल जाकर रोगियों की सेवा में करने लगा। झोले में फल, बिस्कुट, किताबें लेकर वह अस्पताल पहुँच जाता। डॉ. अग्रवाल ने वहां उसे एक लोकर आवंटित करवा दिया जिसमें वह अपना झोला व अन्य सामान रखने लगा। डॉ. अग्रवाल का सर्जरी वार्ड था, वह उसी में ज्यादा जाने लगा। इसी तरह ओर्थोपेडिक वार्ड की तरफ भी उसका ध्यान बढ़ने लगा। कैलाश को यूं बिना रोक टोक अस्पताल में आते जाते देख कई लोगों के माथे भी ठनकते। ऐसे ही एक कर्मचारी को कैलाश का इस तरह आना जाना बिल्कुल पसन्द नहीं आता था, वह हरदम इसे टोकता रहता था, कहता था – चले आते हैं अपना सिर उठाकर जैसे अस्पताल इनकी जागीर हो। कैलाश उसे समझाने की बहुत कोशिश करता मगर उसकी टोका–टोकी जारी रहती।

एक बार प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी, संविधान सभा के सदस्य तथा भू.पू. सांसद रहे मास्टर बलवन्त सिंह मेहता किसी से मिलने अस्पताल आये। उन्होंने कैलाश को मरीजों की सेवा करते देखा तो बहुत प्रभावित हुए। कैलाश का उनसे परिचय नहीं था मगर उनका नाम जरूर सुन रखा था। उन्होंने कैलाश को अपने पास बुलाया और उसके बारे में पूछने लगे।

कैलाश को जब पता चला कि मास्टर बलवन्त सिंह यही हैं तो उसकी प्रसन्नता का पारावार नहीं रहा, वह तुरंत उनके चरणों में नतमस्तक हो गया। थोड़ी देर इधर की बातें चलती रही तो कैलाश ने बताया कि वह रामायण मण्डल के कार्यक्रमों में भी भाग लेता है, इस पर मेहता ने कहा कि उनके घर पर भी प्रत्येक शनिवार को सत्संग होता है, चाहो तो वहां भी आ सकते हो।

अंश - 96

विभिन्न धातु के पात्रों में भोजन करने से लाभ

चाँदी : चाँदी एक ठंडी धातु है, जो शरीर को आंतरिक ठंडक पहुंचाती है। शरीर को शांत रखती है, इसके पात्र में भोजन करने से दिमाग तेज होता है आँखें स्वस्थ रहती है, आँखों की रोशनी बढ़ती है और इसके अलावा पित्तदोष, कफ और वायुदोष नियंत्रित रहता है।

कांसा : काँसे के बर्तन में खाना खाने से बुद्धि तेज होती है, रक्त में शुद्धता आती है, रक्तपित शांत रहता है और भूख बढाती है। कांसे के बर्तन में खाना बनाने से केवल 3 प्रतिशत ही पोषक तत्व नष्ट होते हैं।

तांबा : तांबे के बर्तन में रखा पानी पीने से व्यक्ति रोग मुक्त बनता है, रक्त शुद्ध होता है, स्मरण–शक्ति अच्छी होती है, लीवर संबंधी समस्या दूर होती है, तांबे का पानी शरीर के विषैले तत्वों को खत्म कर देता है इसलिए इस पात्र में रखा पानी स्वास्थ्य के लिए उत्तम होता है।

पीतल : पीतल के बर्तन में भोजन पकाने और करने से .मि रोग, कफ और वायुदोष की बीमारी नहीं होती। पीतल के बर्तन में खाना बनाने से केवल 7 प्रतिशत पोषक तत्व नष्ट होते हैं। भोजन स्वादिष्ट बनता है।

लोहा : लोहे के बर्तन में बने भोजन खाने से शरीर की शक्ति बढ़ती है, लोह तत्व शरीर में जरूरी पोषक तत्वों को बढ़ाता है। लोहा कई रोग को खत्म करता है, पांडू रोग मिटाता है, शरीर में सूजन और पीलापन नहीं आने देता, कामला रोग को खत्म करता है, और पीलिया रोग को दूर रखता है।

स्टील : स्टील के बर्तन नुकसान दायक नही होते क्योंकि ये ना ही गर्म से क्रिया करते है और ना ही अम्ल से इसलिए नुकसान नहीं होता है। इसमें खाना बनाने और खाने से शरीर को कोई फायदा नहीं पहुंचता तो नुकसान भी नहीं पहुंचता।

मिट्टी : मिट्टी के बर्तनों में खाना पकाने से ऐसे पोषक तत्व मिलते हैं, जो हर बीमारी को दूर रखते थे। इस बात को अब आधुनिक विज्ञान भी साबित कर चुका है कि मिट्टी के बर्तनों मे खाना बनाने से शरीर के कई तरह के रोग ठीक होते हैं। आयुर्वेद के अनुसार अगर भोजन को पौष्टिक और स्वादिष्ट बनाना है तो उसे धीरे–धीरे ही पकाना चाहिए। भले ही मिट्टी के बर्तनों में खाना बनने में वक्त थोड़ा ज्यादा लगता है, लेकिन इससे सेहत को पूरा लाभ मिलता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

सेवाभावी आवे रे।
तन–मन–धन सूं
सेवा कर ने
कतराई रोग मिटावे रे।।

कैलाश तूं तो निहाल हो गया– भाई। बापू जी मदनलाल जी का आशीर्वाद फल गया। हाँ, सीतारामदास जी महाराज भीलवाड़ा वाले वर्षों से इनके यहाँ हरि कीर्तन चल रहा– रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम।

वर्षों से भीलवाड़ा में। एक दिन बापू जी को बोले–सेठ साहब बहुत भाग्यवान हो, सेठ साहब। बापू जी हाथ जोड़कर बोले– महाराज, आपका आशीर्वाद है। मैं बहुत प्रसन्न रहता हूँ, लेकिन न मेरे घर का मकान है, न दुकान है। दुकान भी किराये की, घर भी किराये का। मैं तो साधारण सा आदमी हूँ। साधारण में भी असाधारण हो आप। भाग्यवान उनको नहीं बोलते जिनके कारें खड़ी है, जिनके बंगले खड़े है। भाग्यवान उनको बोलते है जो सन्तुष्ट रहता हो।

कालीवास गांव में हमने देखा, छोटा सा गांव। जाना भी बहुत कठिन था। उस समय किशन जी जोशी, झुंझनु वाले माता जी, गिरधारी कुमावत और 73 में जिनका जन्म हुआ प्रशान्त भैया वो भी रविवार, रविवार चला करता था। उस समय 85 में 12 साल का था। कल्पना सोलह साल की, ये भी चलते थे। हमारे श्याम जी कुमावत, गिरधारी कुमावत, जिन गिरधारी कुमावत की बेटी आँचल विश्व की सबसे छोटी उम्र की जादूगरनी।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 223 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023